Research Paper | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 4 | ISSUE : 3 | MARCH 2018

बिहार के कैमूर पठार में सेवा केन्द्रों का उदभव एवं विकास : एक भौगोलिक अध्ययन

प्रो॰ संजय राज [1] | प्रो॰ विद्या शंकर [2]

[1] सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, जगदेव मेमोरियल महाविद्यालय, सकरी, कुदरा, कैमुर.
[2] सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, बाबा गणी नाथ महाविद्यालय, जमुहार, रोहतास, बिहार.

ABSTRACT

Keywords:

परिचय

सेवाकेन्द्रों की स्थापना निरन्तरता एवं प्रगति में भौतिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस शोध पत्र में विभिन्न ऐतिहासिक एवं भौगोलिक तत्वों की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। जो कि अध्ययन क्षेत्र के सेवाकेन्द्रों के उद्भव विकासए एवं विवरण प्रतिरूप में निहित है। विभिन्न भौतिक तत्व सेवाकेन्द्रों की वाहय स्थिति स्थल पर नियंत्रण करते हैं जैसे.जलमार्ग। ये मार्ग स्थानीय यातायात के साधन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। विशेष रूप से प्राचीन काल में जबकि यातायात की व्यवस्था सर्वथा अभाव थाए इनका बड़ा महत्व था। दूसरा महत्वपूर्ण तत्व प्राकृतिक विशेषताएँ है जो कि प्राकृतिक भू-खण्ड, मिट्टी के प्रकार जल-विज्ञान तथा अपवाह का समावेश करते हैं। सेवाकेन्द्रों के उद्भव, विकास, एवं वितवरण पर इन तत्वों का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। अतीत काल में, सम्पूर्ण कैमूर पठार शाहाबाद अध्ययन क्षेत्र, सांस्कृतिक दृष्टि से शाहीनगर दिल्ली से शासित होता था जो कि उत्तर भारत में उसका प्रतिरूप होने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता था। महान आर्य तथा प्राचीन सिधीयां प्रवासीए मुगल आक्रमण, तथा विनाशकारी शाही आक्रामक यथा. तैमूर, गजनी तथा नादिरशाह, सभी गंगा के मैदान को पार कर इस क्षेत्र में आये। इस प्रकार दिल्ली के मुगल साम्राज्य काल में शायद ही कोई ऐसा समय आया हो जिसमें की रणनीति के आधार पर अथवा मुस्लिम क्षेत्र को बसाने के लिये नगरों की स्थापना की गयी हो जिससे की राजपूत योद्धाओं के विरूद्ध सुरक्षात्मक उद्देश्य की पूर्ति हो सके। चूँकि राजधानी से ये क्षेत्र अत्यधिक दूर था जिस पर इस उप.महाद्वीप पर निरन्तर आधिपत्य बना रह सकता था। इस क्षेत्र की क्रमागत ऐतिहासिक युगों में सेवाकेन्द्रों के उद्भव और विकास का अध्ययन अत्यन्त रोचक है।

उद्देश्य

वत्र्तमान समय में सेवा केन्द्र क्षेत्रीय विकास का आधार है, किसी क्षेत्र विशेष में अधिवास के नियोजन तथा आर्थिक एवं समाजिक विकास में सेवा केन्दों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए क्षेत्रिय विकास में इनका महत्व बढता जा रहा है। ये सेवा केंन्द्र मुख्य रूप से क्षेत्रिय हाट बाजार एवं लघु कस्बों के रूप में पाये जाते है। यह क्षेत्र अपनी सुविधानुसार वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते हैं। व्यापार एवं वाणिज्य किसी भी सेवा केन्द्र के मूलभूत एवं केन्द्रीय कार्य है, जैसे-परिवहन, प्रशासन, शिक्षा, चिकित्सा, दूरसंचार, मनोरंजन, धार्मिक, सांस्कृतिक इत्यादि। क्षेत्रिय विकास की प्रक्रिया में इन सेवा केन्द्रों की भूमिका के महत्व को आंकते हुए इस क्षेत्र के उदभव और विकास के क्रमागत अध्ययन आवश्यक है, जिससे क्षेत्रिय विकास को गतिशीलता प्रदान किया जा सके।

विधितन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन में अनुभवात्मक, अवलोकनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधितंत्रों का प्रयोग करते हुए पूर्ववर्ती विद्वानों द्वारा प्रस्तुत अध्ययनों के समीक्षोपरान्त अध्ययन के लिए व्यावहारिक विधियों का प्रयोग कर ग्रामीण विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका का परीक्षण किया गया है। बिहार के कैमूर पठार के सामाजिक-आर्थिक विकास को त्वरित गति प्रदान करने के उद्देश्य से क्रियान्वित विविध कार्यक्रमों तथा प्रयाशों में कई समस्याएँ स्वभावतः उत्पन्न हुई है। इन समस्याओं के सामाधान हेतु क्षेत्रीय विकास के लिए सेवाकेन्द्रों की भूमिका को विश्लेषन करने के लिए प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। विगत दो दशकों से भौगोलिक अध्ययन की प्रवृति एवं विधितंत्र में गुणात्मक एवं मत्रात्मक विश्लेषण समाहित हुए है। अतः नवीन प्रविधि के अनुसार सांख्यिकी में हुए परिवर्तन द्वारा मानचित्रण तकनीकी को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। क्षेत्रीय नियोजन के निरूपण तथा समस्याओं के उपयुक्त सामाधान के लिए अनुभवात्मक, अवलोकनात्मक एवं विश्लेषणात्मक

विधितंत्रों का प्रयोग किया गया है।

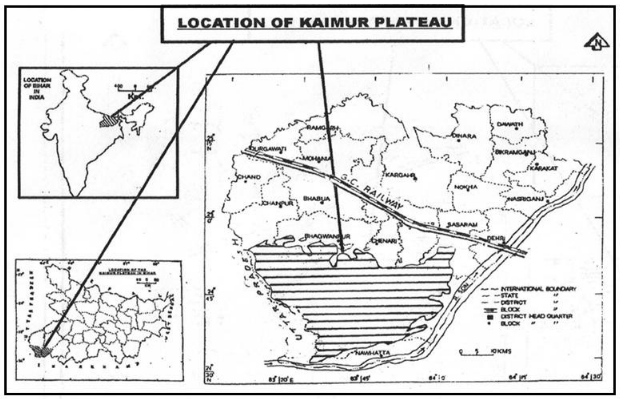

चित्र 1

अध्यन क्षेत्र:

विध्यांचल पर्वत माला की पूर्वी शाखा एवं बिहार में कैमूर श्रेणी के नाम से प्रसिद्ध यह पठारी भाग दक्षिण तथा पूर्व में सोन नदी द्वारा सीमांकित है जो कैमूर एवं रोहतास जिलों में स्थित है। लगभग 1,200 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल वाला यह प्रदेश शैल, बालु पत्थर, चूना पत्थर से निर्मित हैं जिसकी ऊचाँई 300 मीटर से 400 मीटर तक है। पठार की समान्य ढाल उत्तर तथा पूर्व की ओर है। पठार अपने निकटवर्ती मैदान से खड़े कगारों द्वारा अलग है। पठार से निकलकर प्रवाहित होने वाली नदियों के कटाव के कारण कगार के निकट कई घाटों का निर्माण हुआ है। जिससे होकर सड़क मार्ग पठार के भीतरी क्षेत्र की तरफ बनाये गये है। इस क्षेत्र का अक्षांशीय विस्तार 24^0 5' 30" उत्तर से लेकर $25^0$5' 5" उत्तर के बीच स्थित लगभग 1,200 वर्गी कि0 मी0 क्षेत्र में फैलाव हुआ है। पूरा का पूरा क्षेत्र पठारी एवं जंगली होने के कारण इस क्षेत्र का आर्थिक विकास नहीं हो पाया है। यह क्षेत्र कृषि के लिए अनुकूल नहीं है, इसलिए इसका आर्थिक, समाजिक तथा सांस्कृतिक विकास नहीं हो पाया है। क्योंकि इस प्रदेश में सेवा केन्द्रों का विकास भी सीमीत संख्या में हो पाया है जिसके कारण व्यापारिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य, परिहवन एवं संचार सेवाओं का अभाव पाया जाता है। अतः इस प्रदेश में नये सेवा केन्द्रों की संभावना से लेकर क्षेत्रिय विकास में उनकी भूमिका को सुनिश्चित करना ही इस शोध प्रबन्ध का प्रमख उद्देश्य होगा।

इस क्षेत्र की क्रमागत ऐतिहासिक युगों में सेवाकेन्द्रों के उद्भव और विकास का अध्ययन अत्यन्त रोचक है।

1. प्राचीन काल 11000 ए0डी0 से पूर्व
2. मध्यमकाल 11000 ए0डी0 से 1800 ए0 डी0।
3. आधुनिक काल 11800 ए0डी0 से वत्र्तमान शताब्दी।

1. प्राचीन काल 11000 ए0 डी0 से पूर्व:

इस क्षेत्र में प्राचीन काल के अधिवास के क्रमागत विकास की खोज करना सरल नहीं है। यह निश्चित है कि पूरा ऐतिहासिक काल में आर्यों के निवास से बहुत पहले यहाँ मानव अधिवास थे। प्रारम्भिक संस्कृत ग्रन्थों में इनका वर्णन निशाध भर तथा सोयरी के रूप में मिलता है। इस क्षेत्र के आदिवासी धान, संस्कृति, सिंचाई तथा पंचसमिति में विश्वास करते थे और ग्रामीण अधिवास में कृशि संबंधी वितरण की व्यवस्था विकसित थी। उस समय की सभ्यता मूलतः कृशि तथा अपरिश्क्रित धातु प्रणाली पर आधारित थी जो कि लगभग 10 हजार वर्श पूर्व पायी जाती थी।[1] आर्यों के आगमन के पूर्व ही क्षेत्र में कृशि की प्रणाली उन्नत थी।[2] बिहार के भू-भागों में आर्यों के पदार्पण के समय तक गंगाघाटी अपनी उत्पादकता और स्थायी कृशि के लिये विख्यात थी।[3] आर्यों ने आदिवासियों को अपनी बस्तियों तथा स्थायी राज्य तथा स्वामित्व के अधीन कर लिया और मौलिक ग्रामीण समुदायों में सम्मिलित कर लिया।[4] जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ मनुश्य की आवश्यकताएँ भी बढ़ी नये-नये गांव तथा बस्तियाँ बस गई जिन्हें कि तप्पा अथवा थपा की संज्ञा दी गयी।[5]

''तप्पा'' की नयी उपज तथा केन्द्रीय गांव में सांस्कृतिक तथा आर्थिक विभिन्नता थी। विभिन्न वर्गों में विनिमय की अच्छी सुविधाएं भी इस प्रकार के विनिमय तथा मूल्य निर्धारण के माध्यम से बाजार का उद्भव संभव हुआ।[6]

अधिकांश आलोचक तथा इतिहासकार सामान्यतया इस बात पर सहमत है कि आर्य लोग सर्वप्रथम सप्तसिन्धु क्षेत्र आधुनिक सिन्ध तथा पंजाब में बसे और गंगा घाटी में कुछ समय तक वैदिक संस्कृति नहीं पहुंची क्योंकि ऋग्वेद में गंगा का उल्लेख दुर्लभ है।[7] धीरे-धीरे आर्यों की आबादी पूरब की ओर बढ़ी और गंगा की निचली घाटी के उपजाऊ मैदान में आयी वे लोग नदी-मार्ग तथा खुली घाटियों का अनुसरण करते रहे इन पूर्वी मैदानों में आर्यों को आर्यों से पूर्व की विभिन्न जातियाँ मिली और लोगों में जीवन स्तर तथा संस्कृति में विभिन्नता दृश्टिगोचर हुई। जब आर्य लोग गंगाघाटी में आये, वे स्थानीय जातियों से घुल-मिल गये, जिससे वस्तुतः जनसंख्या वृद्धि हुई और जनसंख्या वृद्धि में तीव्रता आ गई क्षेत्र के प्रभुत्वशाली लोगों को इन आर्यों ने अन्न की पूर्ति की और तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ कला और वस्तु शिल्प भी दिया क्रमशः दो प्रकार के समुदायों का विकास हुआ। नगर समुदाय में अधिकांश आर्य वंश के लोग जो कि मुख्यरूप से सैनिक तथा प्रशासक समुदाय के ये जबकि कृशक तथा अन्य समुदाय के लोग गांव में रहते थे। समाज चार भागों में बँट गया जिन्हें कार्य विभाजन के आधार पर ''वर्ण'' की संज्ञा दी गई, ब्राहृारण, क्षत्रिय,

वैश्य तथा शूद्र वर्ण थे। ब्राह्रण धार्मिक कार्यों में, क्षत्रिय सैनिक तथा प्रशासनिक कार्यो में, वैश्य व्यापार और वाणिज्य में रत थे तो शूद्र अन्य वर्ण के लोगों के सेवा कार्य में संलग्न थे। अधिवास के विकास का जहाँ तक संबंध है आर्यों में 6 प्रकार के आवास थे।[8]

1-घोश अथवा गोप (पशु सम्बर्द्धन शाला), 2- पाली (आदिवासी अधिवास), 3- दुर्ग (किला), 4- ग्राम (गांव) जो कि दुर्ग के चारों ओर उपनगर विकसित हुए, 5- खवंट अथवा पटेना (टाउन), 6- नगर अथवा सीटी। इन तीन आबादियों में से यथा- दुर्ग, खरवट, तथा नगर, नगरीय कार्य सम्पादित करते थे। दुर्ग उपनगर लड़ाई के मौर्चेबन्दी के स्थानों पर स्थापित किये जाते थे। चूँकि कैमूर पठार बिल्कुल जंगली तथा पठारी भाग होने के कारण इन क्षेत्रों में नगरीये अधिवास उस समय भी नहीं थी तथा आज भी नहीं है।

बुद्ध के काल में 16 महागणनिवेश (महाअध्ययन क्षेत्र) थे जिसमें से एक मगध था, जिससे हमारा अध्ययन क्षेत्र निकट था। लगभग 400 मील से अधिक में विस्तृत था। ईसा के 5, 6 शताब्दी पूर्व काशी नगर में विविध क्रिया-कलापों का बाहुल्य था जिसके फलस्वरूप धर्म तथा धन पर आधिपत्य की भावना का विकास हुआ जिसका माध्यम वैश्यों के द्वारा व्यापार एवं उद्योग का विकास था।[10] कुशल कारीगरों तथा वास्तुशिल्पियों के घर, विश्राम गृह (बिहार, सड़कें, बाजार, समतल भूमि, विशाल समाकक्ष तथा उपवन वाठिका की स्थापना उपयुक्त तथा महत्वपूर्ण स्थानों में की। लेकिन इस तरह का विकास हमारे अध्ययन क्षेत्र में नगन्य था।

ईसा से पूर्व 323-185 मौर्य सम्राज्य अपनी तरह का पहला साम्राज्य था। उत्तरी भारत के विस्तृत क्षेत्र पर इन्होंने शासन किया साथ ही साथ दक्षिण भारत का कुछ भू-भाग इन्हीं के अधीन था। नगर के विकास के लिये उन्होंने एक सुदृढ़ आधार प्रस्तुत किया। इतिहास-कारों के अनुसार विकास के क्रम में विशेष कदम उठाये गये यथा-कृशि, वस्तु के विनिमय एवं वितरण, सड़क का निर्माण तथा घाटों का निर्माण तथा घाटों के संगठन की स्थापना की गयी, इससे क्षेत्र के विकास में सहायता मिली और केन्द्रों का विकास हुआ। इस अवधि में तीन प्रकार के बाजार का प्रचलन था। 1- थोक बाजार (थोक बिक्री), 2- थोक व्यापारी तथा फुटकर बिक्रेताओं के मध्य व्यापार में लगे लोग, 3- फुटकर बिक्री। इस तरह के केन्द्र शाहाबाद जिला के मात्र आरा, सासाराम, बक्सर तथा डुमराँव में शुरू हुआ था।

इसकाल में सम्पूर्ण मौर्य साम्राज्य में पदानुक्रम के आधार पर सेवाकेन्द्रों की स्थापना एवं वितरण हुआ। बौद्ध धर्म का अधिकतम उत्थान इसी काल में हुआ। मौर्य काल में प्रर्याप्त संख्या में सेवा केन्द्रों का उद्भव एवं विकास हुआ, अधिकांश सेवा केन्द्र क्रियात्मक थे तथापि कुछ विशेष केन्द्र भी विद्यमान थे। प्रशासनिक नगरों को राजधानी, व्यापारिक तथा नदी के किनारे के नगरों को (पत्तन) तथा वन नगर को (दुर्ग) कहते थे।

इसा मसीह के दूसरी शताब्दी पूर्व मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् गुप्त साम्राज्य ईसा मसीह के बाद चतुर्थ शताब्दी के प्रारम्भ में प्रभुत्व में आया। सुंग, कण्व तथा कुशाण, मौर्य तथा गुप्त साम्राज्य के मध्य शासन करते थे। अपने सर्वांगीण विकास के कारण गुप्तकाल भारत का स्वर्णयुग कहा जाता है। ईसामसीह के बाद छठवीं शताब्दी में गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् हर्शवर्द्धन उत्तरी भारत में शक्तिशाली शासक के रूप में उभरा उसकी शासन व्यवस्था सुदृढ़ थी। गुप्त तथा मौर्य काल के अन्तराल में अनेक नगरों का पतन हुआ। नगर की स्थापना एवं विकास का दूसरा चरण शुरू हुआ जिसमें कुछ नये तथा पुराने सेवाकेन्द्र विकसित किये गये। भर तथा सोयरी आदिवासी जातियों के द्वारा इस क्षेत्र पर थोड़े काल तक ईसा के बाद 7वीं तथा 8वीं शताब्दी में आधिपत्य रहा, इस काल में भी कुछ सेवा केन्द्र विकसित हुए यथा- केराकल, चन्द्रवक, मछलीशहर तथा मुगराबादशाह पुर प्रमुख है और नगर प्रमुखों द्वारा नियंत्रित थे।

2. मध्यकाल 11000 ए0 डी0 से 1800 ए0डी0:

राजपूत बस्तियों से पूर्व सम्पूर्ण शाहाबाद क्षेत्र मुख्यतया पहला भर तथा दूसरा सोयरी नामक दो जातियों के अधिकार में था। राजपूतों के द्वारा इन लोगों से युद्ध लड़ना पड़ा और आदिवासियों को मैदानी क्षेत्रों से भगाकर जंगलों तथा पहाड़ों में बसने को बाध्य किया गया । जिसके परिणाम स्वरूप भभुआ अधौरा, रोहतास गढ़, भगवानपुर, रामपुर, तिलौथु आदि क्षेत्रों में आदिवासियों के द्वारा विकिरण अधिवासियों का विकास शुरू हुआ।

(अ) राजपूत काल (1000 ए0डी0 से 1206 ए0डी0):

राजपूत बस्तियों के चिन्ह 10वीं शताब्दी में मिलते है जो कि 11वीं शताब्दी में अधिक तीव्र हो गये। सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में गहरवाद राजपूत छा गये, आधुनिक बाजार केन्द्रों की नींव उनके सरदारों द्वारा डाली गयी। संभवतः अपने आधिपत्य क्षेत्र में ही राजपूतों के विभिन्न वंशजों में अपनी- अपनी बस्तियां बसाई बहुत से केन्द्रीय गांव जो कि सोयरी सरदारों के मुख्यालय थे राजपूतों द्वारा अधिकार मे कर लिये गये। गंगा की निचली घाटी में बसे पाटलिपुत्र, बक्सर तथा डुमराँव इसके उदाहरण हैं।[11] 12वीं शताब्दी के अन्त में वैश राजपूतों ने भरों को खदेर कर गंगा घाटी में उनके किले पर अधिकार करके शाहाबाद स्थापित किया।[12]

(ब) दिल्ली सुल्तान का शासन काल (1206 ए0डी0 से 1526

एडी):

दिल्ली सुल्तान (11206 ए0डी0 से 1526 ए0डी0) के पहले सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र हुआ, अकबर का शासनकाल अपेक्षाकृत अधिक सहिश्णु तथा शान्तपूर्ण था। जिसमें बहुत से केन्द्र तथा उपनगर विकसित हुए उद्योग धन्धे फले-फूले विशेष रूप से पाटलीपुत्र, आरा, बक्सर, डुमराँव की स्थिति समृद्धिशाली थी।

महान अकबर की राजनैतिक आर्थिक स्थापित्व का यह काल अपेक्षाकृत उसके पुत्र जहाँगीर (1605-1627) तथा उसके पौत्र शाहजहाँ (1627-1658) के शासनकाल में भी बना रहा। 100 वर्शों के इस काल (1556 से 1659) में अध्ययन क्षेत्र की आर्थिक दशा बहुत अच्छी रही तथा जनसंख्या का दबाव भी कम था। अतः जहाँगीर के शासनकाल में कुछ छोटे-छोटे सेवाकेन्द्र विकसित हुए लेकिन सेवाकेन्द्रों की स्थापना में राजपूत सरदारों का ही हाथ रहा शाहजहाँ के पुत्र औरंगजेब के शासनकाल (1658 से 1707) मे कुछ एक उप नगरों की ही स्थापना हो सकी और उसकी गलत नीतियों क कारण कुछ सेवाकेन्द्र को गम्भीर क्षति पहुंची । मुगल शासन के अधीन शाहाबाद जिले को राजस्व प्रशासन के दश्टिकोण से दो सरकार (राजस्व ईकाई) शाहाबाद एवं रोहतास सरकार थी । चैसा सरकार (राजस्व ईकाई) अलग प्रशासनिक इकाई थी। शाहाबाद सरकार वर्तमान में शाहाबाद का उतरी भाग था और उसमें तीन परगनाए थी। Ratan, Kotah & Mangror.

3. आधुनिक काल (1800 ए0डी0 से वत्र्तमान शताब्दी):

(अ) प्रारम्भिक ब्रिटिशकाल (1800 ए0डी0 से 1857 ए0डी0):

18वीं शताब्दी के लगभग भारतीय इतिहास में अंग्रेजों का आगमन हुआ। 18वीं शताब्दी के अंत तक सेवाकेन्द्रों का मुख्य कार्य न्यूनाधिक सम्पन्न हो गया। अतः उनकी संख्या में कोई उल्लेखनीय परिवत्र्तन नहीं हुआ किन्तु उन्होंने भारतीय जीवन में विविधता एवं प्रकार में अभिवृद्धि की ब्रिटिश शासन में शान्त पर्यावरण जीवन तथा संपत्ति की सुरक्षा क्षेत्र में स्थापित हो गयी जिससे सेवाकेन्द्रों के उद्भव एवं विकास की प्रवृत्तियों में उल्लेखनीय परिवत्र्तन हुआ। इस काल में सेवाकेन्द्रों के विकास की तीन अवस्थायें परिलक्षित होती है। 1- केन्द्रीकरण से पूर्व की स्थिति, 2- सेवाकेन्द्रों के बिना केन्द्रीय अवस्था, 3- सेवाकेन्द्रों के साथ केन्द्रीकरण की स्थिति।

इसकाल में सेवाकेन्द्रों के विकास के अनेक तत्व देखने को मिलते हैं जिनमें सबसे महत्वपूर्ण यायायात के साधनों में सुधार है। प्राचीन काल में यातायात के मार्ग में प्रकृति द्वारा प्रदत्त जलमार्ग था। आधुनिक काल में नदी के मार्ग में कोई जनरूचि नहीं है क्योंकि वे मुख्य रूप से मन्दगति वाली थी फलस्वरूप समय बहुत लगता था उनका प्रवाह एक निश्चित दिशा में होता है और उनके प्रवाह में ऋतुएँ प्रभावशाली है। नदी यातायात दीर्घ काला तक व्यापार की दिशा में बिना किसी चुनौती के सर्वोपरि रहा, चूंकि सड़क की कोई प्रतिस्पर्धा नहीं थी। सन् 1803 तक शहरी क्षेत्रों को छोड़कर लगभग सम्पूर्ण शाहाबाद जिला में कोई पक्की सड़क नहीं थी। शाहाबाद जिला के प्रशासनिक मुख्यालय के महत्व के कारण केन्द्रों में विकास हुआ। तहसील अथवा उपनगर छावनी तथा अन्य प्रशासनिक विभाग स्थापित हुए। सन् 1857-58 की महाक्रान्ति जो ब्रिटिश शासन के विरूद्ध थी। ने सेवाकेन्द्रों को क्षति पहुंचायी चूंकि क्षेत्र का जनसमुदाय ब्रिटिश शासन के विरूद्ध उठ खड़ा हुआ इसलिए क्षेत्र में आर्थिक विकास की स्थिति दयनीय ही रही।

(ब) ब्रिटिश क्रान्तिकाल अथवा रेलमार्ग युग(1857 ए0डी0 से 1901 ए0डी0)

अध्ययन क्षेत्र तहसील तथा परगना में न्यायालय, राजकीय कार्यालय तथा उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों के आवास होने के कारण प्रशासनिक केन्द्रीकरण का महत्व बढ़ गया है विशिष्ट नागरिकों तथा प्रशासनिक अधिकारियों की भूमिका के साथ साथ शैक्षणिक तथा अन्य प्रकार के संस्थाओं के योगदान से सेवा केन्द्रों का द्वतगामी विकास हुआ, जिसमें स्वास्थ्य केन्द्रों का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

विभिन्न सेवाकेन्द्रों में रेलमार्ग के आविभांव से मध्ययुग के नदीतट पर बसे व्यापारिक सेवाकेन्द्र या तो विनश्ट हो गये या कुप्रभावित हुए इसका मुख्य कारण रेल यातायात है जिसमें सुधार और वेग होने के कारण नये व्यापारिक केन्द्र विकसित हो गये। अध्ययन क्षेत्र तथा जौनपुर नगर में सर्वप्रथम 1874 में रेलमार्ग की स्थापना हुई यह एक सामान्य विशेषता है कि व्यापारिक उपनगर रेलमार्ग के किनारे स्थापित किये जाते हैं और इनका विस्तार प्रतिरूप रेलवे स्टेशन की और अग्रसर होता है। इसी काल (1857-1901) में रेलमार्ग के प्रभाव के कारण कुछ ग्रामीण व्यवस्थाएं जिनसे होकर रेलमार्ग गया, शीघ्र ही सेवाकेन्द्रों के रूप में विकसित हुई। व्यापारिक क्रिया-कलाप में वृद्धि के कारण कुछ रेलवे स्टेशन अपने आप में सेवाकेन्द्र बन गये।

(स) स्वतंत्रता से पूर्व का काल (1901 ए0डी0 से 1947 ए0डी0):

20वीं शताब्दी के पूवार्द्ध में निश्चय ही सेवाकेन्द्रों का विकास एवं विस्तार अपेक्षाकृत पूरी शताब्दी में सर्वाधिक हुआ। मोटर तथा बसों के यातायात के प्रारम्भ तथा सुधार के कारण

पर्याप्त संख्या में सेवाकेन्द्रों की प्रवृत्ति एवं प्रभाव में परिवत्र्तन हुए क्षेत्रीय जनता दोनों का ही सर्वाधिक लाभ उठाया समय, दूरी, लम्बी यात्रा तथा कम खर्च आदि तत्वों को देखते हुए उपयोग किया। वत्र्तमान शताब्दी में उपरोक्त तत्व सेवाकेन्द्रों से सम्बन्धित राजनैतिक प्रशासनिक प्रेरणा के साथ-साथ यातायात के मार्ग तथा अन्य विकसित क्रियाकलाप के तत्व सेवाकेन्द्रों के विकास एवं विस्तार को नियंत्रित करते रहे। उल्लेखनीय पहलू यह है कि नदी के किनारे के बाजार जहाँ रेल तथा मोटर की सुविधाएं नहीं विकसित हुई उनका धीरे-धीरे ह्रास हुआ अथवा उनकी मौलिक स्थिति का प्रवाह अवरूद्ध हो गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् के काल में सामाजिक सुविधाओं का विकास हुआ। शिक्षा, चिकित्सा, तथा प्रशासनिक सेवाकेन्द्रों की स्थापना ऐसे स्थानों में विकसित हुई जहां पर यातायात की सुविधाएं एवं मार्ग उपलब्ध थे।

(द) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का काल (1947 ए0डी0 से वत्र्तमान समय तक)

स्वतंत्रता (1947) के पश्चात् स्थानीय संगठनों में अनेकानेक परिवत्र्तन हुए जिनका उद्देश्य क्षेत्र में विविध सुविधाएं की ओर भी छोटी-छोटी शाखायें खोली गयी। सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक ढाँचे ब्रिटिश शासन के दमन एवं कुचक्र से प्रभावित हो चुकी थी। सन् 1956 में सर्वप्रथम विकास के संगठन क्षेत्रीय विकास के लिये बने जैसी की आज स्थिति है अध्ययन क्षेत्र में 5 तहसीलें, 20 विकास खण्ड तथा 218 न्याय पंचायते हैं। विकास खण्ड क्षेत्रीय विकास की एक इकाई है। सम्पूर्ण क्षेत्र में विकास के संगठनों की आवश्यकता है विकास खण्ड परियोजना बजट के अन्तर्गत प्रौढ़ साक्षरता केन्द्र तथा विद्यालय की स्थापना, सड़क का निर्माण, सिंचाई का कार्य, कुओं और तालाबों की खुदाई की पृश्ठभूमिक में यहीं विचार था कि क्षेत्र में सेवा और सुविधाओं के स्तर में एक उत्कर्श रहे।[20]

इसके अतिरिक्त पंचवर्शिय विकास की योजनाएं जिसका समुचित नियोजन राश्ट्रीय सरकार के द्वारा किया गया, के कारण सामुदायिक विकास के कार्यक्रम में सामाजिक एवं आर्थिक क्रियाकलापों में वृद्धि हुई। कतिपय राजकीय विभागों ने छोटे-छोटे गांव के सामुदायिक स्तर पर अपनी सेवाएं प्रदान की यथा- सहकारी आन्दोलन, बाजार, चकबन्दी तथा सिंचाई आदि योजनाओं से सामाजिक तथा सांस्कृतिक सेवाओं को बल मिला, शिक्षा तथा चिकित्सा की सुविधायें मिली, यातायात तथा संचार की सेवाओं के साथ-साथ व्यापारिक सुविधायें प्राप्त हुई सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में मुख्य रूप से ऐसे सेवाकेन्द्र स्थापित हुए। उपरोक्त सभी सुविधाएं क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सेवाकेन्द्रों के उद्भव तथा विकास पर प्रभाव डालती है।

4. आधुनिक काल (1800 ए0डी0 से वत्र्तमान शताब्दी):

(अ) प्रारम्भिक ब्रिटिशकाल (1800 ए0डी0 से 1857 ए0डी0):

18वीं शताब्दी के लगभग भारतीय इतिहास में अंग्रेजों का आगमन हुआ। 18वीं शताब्दी के अंत तक सेवाकेन्द्रों का मुख्य कार्य न्यूनाधिक सम्पन्न हो गया। अतः उनकी संख्या में कोई उल्लेखनीय परिवत्र्तन नहीं हुआ किन्तु उन्होंने भारतीय जीवन में विविधता एवं प्रकार में अभिवृद्धि की ब्रिटिश शासन में शान्त पर्यावरण जीवन तथा संपत्ति की सुरक्षा क्षेत्र में स्थापित हो गयी जिससे सेवाकेन्द्रों के उद्भव एवं विकास की प्रवृत्तियों में उल्लेखनीय परिवत्र्तन हुआ इस काल में सेवाकेन्द्रों के विकास की तीन अवस्थायें परिलक्षित होती है। 1- केन्द्रीकरण से पूर्व की स्थिति, 2- सेवाकेन्द्रों के बिना केन्द्रीय अवस्था, 3- सेवाकेन्द्रों के साथ केन्द्रीकरण की स्थिति।

पुराना शाहाबाद सरकार के आधे से अधिक क्षेत्रों को तीन राजपूत जमींदारों इन्द्रजीत सिंह (डुमरांव) भूपनारायण सिंह (जगदीशपुर) भगवत सिंह बक्सर के बीच स्थायी बन्दोबस्ती की गयी। दिनारा क्षेत्रों का अधिकांश भाग चैधरी दयाल के हाथों बन्दोवस्त किया गया। दक्षिणी शाहाबाद के क्षेत्रों को समय-समय पर अरिमर्दन सिंह भगवानपुर मो0 राजा खान के बीच बन्दोबस्ती हुई लेकिन कुछ हत्या के मामलों एवं अन्य प्रशासनिक कार्यो को ध्यान में रखकर कुछ भाग सरकार के पास वर्तमान कैमूर का पहाड़ी भाग के रूप में रहा।

1857-58 में विद्रोह के बाद विद्रोहियों के 869 स्टेट को जप्ती / नीलामी की गई, जिसके अधिकांश स्टेट कुवँर सिंह के पूर्वज बाबू भूप नारायण सिंह (1781) का था। राजस्व मांग में काफी बढ़ोतरी हुई जो बढ़कर 15, 81, 241 रूपया तक हो गई। वर्श 1908 तक 103 स्टेट पर सरकार का सीधे नियंत्रण था, जिसकी राजस्व मांग 2, 22, 629 रूप्या था, जिसमें वर्तमान भभुआ जिले के जमीन्दार अली मर्दन सिंह के 1785 जप्ती/ नीलामी से प्राप्त स्टेट भी शामिल थे।

उपरोक्त राजस्व इकाईयों के अतिरिक्त बाँसकट्टी महाल, जो रोहतास परगना के अधीन था तथा जिसपर राजा शाहमल एवं उनके परिवार का 1765-1862 तक अधिकार रहा, वे ही वन उत्पाद बाँस, लकड़ी पर अधिभार कर लेते थे। बाद में आगे चलकर सरकार ने सम्पूर्ण पहाड़ी क्षेत्र बाँसकट्टी महाल के साथ अपने अधीन कर लिया। बाँसकट्टी महाल 108 मौजों में तथा लगभग 200 रक्वायर मील क्षेत्र में फैला था। इसके अतिरिक्त चुना पत्थर, वन उत्पाद संग्रह करने वाले व्यक्ति से भी कर लिया जाता

था।

1857 विद्रोह के बाद जप्ती-नीलामी से प्राप्त क्षेत्रों में जिसमें अधिकांश बाबू कुँवर सिंह के स्टेट के क्षेत्र में थे, माईलेंस स्टेट सबसे बड़ा था। इसमें अधिकांश भाग जंगल के रूप में था। कुछ भाग जंगल के बाहर थे 1908 में लीज समाप्त होने के बाद माई लेंस को स्थाई प्रोपराईटर का दर्जा दिया गया।

वर्ष 1844-1846 के बीच मौजों के बाउन्डरीज का सर्वे, सर्वेदल द्वारा किया गया (बंसम जव जीम उपसम) वर्श 1863 में सर्वे का कार्य आरम्भ हुआ जो गंगा के दियरा क्षेत्र पर केन्द्रीत था। 1873-1878 के बीच सोन नहर से सिंचित क्षेत्र का सर्वे किया गया तथा 1881-1883 के बीच गंगा के किनारे अवस्थित राज्यों का राजस्व सर्वेक्षण किया गया। 1901/1904 तक सेर्वे करेक ठण्ज्ण्।बज (1885) की विभिन्न धाराओं के तहत रिकार्ड ऑफ राइट (खतियान) तैयार किया गया। 1908-1916 के बीच जिले के शेष बचे क्षेत्रों का सर्सेक्षण करके खतियान तैयार किया गया।

सर्वे समाप्ति के बाद एवं प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ होते ही राश्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भी तेजी आई तथा किसानों के बीच अपने अधिकार को लेकर आन्दोलन आरम्भ हुए । वर्श 1924-25 में भभुआ और बक्सर अनुमण्डल में फसल उत्पाद एवं राजस्व भुगतान को लेकर भी विवाद हुए तथा किसानों एवं जमींदारों के संबंध भी तनाव पूर्ण होते चले आये । अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने जमींदारी प्रथा को समाप्त करने का प्रस्ताव पास किया। जमींदारों ने देखा कि कांग्रेस के सत्ता में आने के बाद जमींदारी प्रथा समाप्त हो जायेगी तो उन्होंने किसानों को भाउली और बटाई लैंड से बेदखल करना आरम्भ किया।

आजादी मिलते ही ठपींत जंजम डंदंहमउमदज व विमेज जमे - ज्मदनतम ।बज 1949 - । इवसपजपवद वेउपदकंतप ।बज व 1949 बिहार विधान सभा द्वारा पारित हुई जिसे देश के सर्वोच्च न्यायालय तक चुनौती दी गई। वर्शों बाद अनेक बाधाओं एवं संविधान संशोधन के बाद ठपींत संदक त्मवितउे । बज कार्यरत हुआ और 1952 से शाहाबाद जिले में लागू हुआ। 1 जनवरी 1956 से जमींदारी प्रथा पूर्ण रूपेण समाप्त हुई तथा जमींदारों की शक्तियों सरकार में शामिल हो गयी।

1916 के पूर्व सर्वे समाप्त होने तक शाहाबाद जिले का राजस्व प्रशासन पुराने मुगलिया शासन पर आधारित था जिसमें परगनाएं थी। 1916 के बाद सम्पूर्ण शाहाबाद जिला के बेहतर राजस्व प्रशासन को ध्यान में रखते हुए 11 राजस्व थानों एवं निश्चित मौजों में बाँटा गया।

भभुआ अनुमण्डल अन्तर्गत भभुआ राजस्व थाना में 1038 मौजे थे जो 5,82,725 एकड़ क्षेत्रों में फैले थे एवं मोहनियां राजस्व थाना में 677 मौजे थे जो 2,46,732 एकड़ क्षेत्रों में फैले थे।

जमींदारी उन्मूलन के बाद सारे शाहाबाद को 41 अंचलों में तथा 410 हल्कों में विभाजित किया गया जिसमें 15,467 राजस्व (भुगतेय) एवं 464 रेट फ्री तौजी थे। राजस्व मांग 18,92,070 तथा सेस से 12,88,010 रूपया था। सभी 41 अंचल को मात्र 10 अंचल अधिकारी के अन्तर्गत रखे गये। जिला समाहर्ता को राजस्व प्रशासन का जिले का मुखिया बनाया गया। उनकी सहायता के लिए अपर समाहर्ता एवं सभी चारों अनुमण्डल (आरा, बक्सर, सासाराम एवं भभुआ) में उप समाहर्ता भूमि सुधार एवं विकास नियुक्त किये गये। इसके अतिरिक्त जिला अनुमण्डल से सब डिप्टी कलक्टर भूमि सुधार के लिय नियुक्त हुए। अंचलों में अंचल निरीक्षक जिनकी सहायता के लिए एक चेनमैन तथा हल्कों में हल्का कर्मचारी एवं उनकी सहायता के लिए तहसील पिउन का भी प्रावधान किया गया। सभी अंचलों के लिए अंचल अधिकारी को जवाबदेही दी गई ।

जमींदारी समाप्त होने के बाद सभी 6096 मौजों में से 5390 मौजों में अप्रैल 1957 तक फिल्ड बुझारत तथा कार्य सम्पन्न हुआ। यह खतियान तैयार करने का संक्षिप्त सर्वे था। फिल्ड बुझारत में रैयतों एवं राजस्व कर्मचारियों द्वारा अनेक अनियमितताओं की खबरें आने लगी तथा साबिक सर्वे भी लगभग 50 वर्श पुराना हो चुका था। अतः विचारापरान्त पूरे शाहाबाद जिलें में वर्श 1960-61 से नया सर्वे आरम्भ किया गया जो 1970 में समाप्त हुआ और उसके बाद नये सर्वे खतियान का निर्माण किया गया।

10 नवम्बर 1972 को शाहाबाद में सासाराम अनुमण्डल को अलग करके उसे रोहतास जिला के रूप में एक नव सृजित जिला का रूप दिया गया। इसके अन्तर्गत भभुआ अनुमण्डल इकाई बना रहा।

वर्ष 1991 में 17 मार्च को नव सृजित भभुआ, जो बाद में चलकर कैमूर कहलाया जिला का सृजन किया गया। आरम्भ में विशेष कार्य पदाधिकारी को प्रभार देकर जिले का कार्य शुरू हुआ। रोहतास के ही समाहर्ता श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव प्रभारी समाहर्ता के रूप में नियुक्त किये गये। 13 अगस्त 1991 का श्री आर0के0 श्रीवास्तव प्रथम समाहर्ता के रूप में अधिसूचित हुए और उन्होंने 19.08.1991 को पदभार ग्रहण किया। इस प्रकार श्री आर0के0 श्रीवास्तव ही वास्तविक प्रथम समाहर्ता बने।

वर्तमान समय में कैमूर एवं रोहतास जिला दोनों मिलाकर 3778 गाँव है जिसमें रोहतास जिलें में 2069 तथा कैमूर जिला

में 1709 है। लेकिन मेरा अध्ययन क्षेत्र रोहतास एवं कैमूर जिलों का पठारी भाग सम्मलित है जिसमें पूर्णरूप से कैमूर जिला का अधौरा तथा रोहतास जिला का तिलौथू, रोहतास एवं नौहट्टा अंचल आता है। इसके अलावे कैमूर जिला का चैनपुर, भगवानपुर, रामपुर तथा रोहतास जिला का चेनारी, शिवसागर तथा सासाराम अंचल का दक्षिणि पठारी भाग सम्मिलित है। मेरे अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत कुल अधिवासों की संख्या 1126 है जिनमें से 67 सेवाकेन्द्रों को चिन्हीत किया गया है।

REFERENCES

1. *Mukherjee, R. Kamal, The Changing Face of Bengal, Calcutta (1938), pp. 53-34.*

2. *Baden-Powell, H., Indian Village Community, London: Longmas 1896, p. 49.*

3. *Mukherjee, R. Kamal, Democracies of the East: A Study in comparative politics London, (1923), p. 243.*

4. *Maine, H.S., Village Communities in the East and West, London, (1876), p. 192.*

5. *Dutt, R.C., Early Hindu Civilization, Calcutta, (1908), p. 243.*

6. *Rhy-David, T.W., Buddhist India London, T. Fisher Unwin (1911), p. 9.*

7. *Chaudhary P.C. Roy (1966) Bihar District Gazetteers Shahabad-p 533*

8. *Singh, R.L. and Singh, S.M., 'Mungra Badshahpur: Arban Settlement in the Ganga-Ghaghara Doab. West', N.G.J.I., Vol. VI, Part iv, (1960), pp. 199-206.*

9. *Singh, H.H., "Evolution of the Town Scape of Jaunpur City", N.G.J.I., Vol. IV, Part I (1958), p. 38.*

10. *Bihar District Gazetteers, Shahabad (1966), p. 152.*